भारतीय कला संस्कृति पर विदेशी का प्रभाव

डॉ0 आनन्द कुमार शर्मा

असि0 प्रोफे0, राजकीय कालिज ऑफ आर्ट, चंडीगढ़

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 आनन्द कुमार शर्मा, भारतीय कला संस्कृति पर विदेशी का प्रभाव,
Artistic Narration 2017, Vol. VIII, No.2, pp 88- 93
http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

भारत सभ्यता–संस्कृति में अग्रणी होने के कारण विश्व में ''सोने की चिड़िया'' के नाम से विख्यात था। मानव इतिहास के प्रारम्भिक काल से ही हमारा भारत कर्म की लीला भूमि रहा है।

सबसे पहले भारत के सम्बन्ध वर्मा (सुवर्णभूमि), मलाया (सुवर्णद्वीप), कम्बोडिया (कम्बोज) और जावा (यवद्वीप) से स्थापित हुए। इन देशों में भारतीय मंदिरो की तरह भव्य मंदिरो का निर्माण हुआ, जैसे– कम्बोडिया में अंकोरवाट का मन्दिर। इस मन्दिर को सूर्य वर्मा द्वितीय ने बनवाया था। जो अपनी विशालता तथा सुन्दरता के कारण अनेक आश्चर्यजनक कीर्ति माना जाता है। साथ ही अनेक भारतीय प्रथाओं का प्रचलन हुआ। पहले हिन्दू धर्म का बहुत प्रचार प्रसार व वृद्धि हुआ, परन्तु अनेक कारणो से हिन्दु धर्म का कालान्तर में ह्रास होना प्रारम्भ हुआ, और बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार हुआ। इन देशो के मंदिरो के मूर्तिकला व चित्रकला में और भारतीय मंदिरो (बौद्ध) के कलाकृति में बहुत साम्य है। इस मंदिर में भारतीय महाकाव्य रामायण व महाभारत की प्रमुख घटनाओं के उभारदार शिल्प चित्र बनाये गये हैं। अंग्रेजो के अत्याचार से दुखी होकर भारत में 1857 में विद्रोह का प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध लड़ा गया, जिसे अंग्रेजो ने अपनी कूटनीति व युद्ध कौशल व आधुनिक सेना से दबा दिया। भारत में रेल, सड़क, टेलीफोन इत्यादि का जो जाल अंग्रेजो ने बिछाया, वह उन्होने अपने स्वार्थ में बिछाया था, ताकि वे पुनः अपने विरूद्ध उभड़े युद्ध को शीघ्र दबा सकें। विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं का हमारा देश धर्म, परम्पराओं के कारण आज भी जीवन्त है, भारत का धन विदेशो में लूट कर ले जाया गया, वह चिन्ता की बात नहीं है। धन गया है, तो आ जायेगा। प्रसन्नता की बात तो यह है कि लगभग 5000 वर्ष ई0पू0 से लेकर आजतक भारत की धर्म–प्राण जनता ने अपना धीरज व धरम नहीं खोया है अपने धर्म व परम्परा को आज तक, अपने प्राणों के समान सुरक्षित रक्खी बैठी है।

भारत अपने प्राचीन श्रेष्ठ जनसंख्या, कृषि, व्यापार, अर्थ व सभ्यता–संस्कृति में अग्रणी होने के कारण विश्व में ''सोने की चिड़िया'' के नाम से विख्यात था। भारत की यह उत्तमता ही उसके लिए समस्या व दुख का कारण बना। विश्व के कोने कोने से विदेशी शासक, भारत को लूटने का जो क्रम बनाये, वह अंतिम आक्रान्ता अंग्रेजो तक जारी रहा। सभी विदेशी आक्रान्ताओं जैसे आर्य, यूनानी, कुषाण, शक, हुण, तुर्क, इरानी, अफगानी, मंगोल, मुगल, पुर्तगाली, फ्रांसीसी व अंग्रेज इत्यादि ज्ञात, अज्ञात सभी लोगो ने यहाँ के मूल निवासी द्रविण, हिन्दुओं का लगभग 3 हजार वर्षो में करोड़ो की संख्या में बध किया और बल पूर्वक अपना–अपना धर्म मनवाया, यहाँ का धन लूटा, मंदिरो को तोड़ा व अपने सभ्यता व संस्कृति में ढालने का भरपूर प्रयास किया। विज्ञान के रसायन शास्त्र में, जब दो पदार्थ आपस में मिलते है, तो उनके संयोजन से तीसरा पदार्थ बन जाता है। उसी प्रकार भौतिक शास्त्र के वैज्ञानिक न्यूटन के गति सिद्धान्तानुसार, प्रत्येक स्थित या चलायमान पिन्ड जब एक दूसरे पर आघात करते है, तो उनमें विपरीत दशा में समान प्रतिक्रिया होती है। इसी प्रकार जब दो देशों की सैन्य शक्तियाँ व सभ्यता–संस्कृति, एक दूसरे से टकराती है, तो वे एक दूसरे पर अपना प्रभाव डालती है। विश्व की सभी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति जिसका विवरण अन्त में लिखा गया है, बारी–बारी से काल के गाल में समा गयी और कुछ यादगार चिन्ह ही छोड़ गयी है। विश्व की प्राचीन सभ्यताओ में मात्र भारत ही एक मात्र देश अवशेष है, जिसकी सभ्यता–संस्कृति जीवन्त व आध्यात्मिक होने के कारण अभी भी हिमालय की भांति स्थिर है।

प्राग्–ऐतिहासिक काल में भी भारत में मनुष्य अपनी सभ्यता व संस्कृति में विकास करते गये। जब पृथ्वी पर सभ्यता का उषाकाल था, तो भारतीय संस्कृति अपने उत्थान के मार्ग पर तीव्रगति से चलायमान थी। भारत की सैंधव सभ्यता इसका प्रमाण है। भारतीय संस्कृति विश्व की अत्यन्त प्राचीन सभ्यता है – इसके असंख्य पुरातात्विक साक्ष्य भारत के प्रत्येक राज्यों के स्थानों जैसे – चेन्नई के समीप पल्लावरम, चिगंलपेट बेल्लौर, तिन्नबल्ली में, पंजाब के सोहन नदी – घाटी व पिंडीघेव क्षेत्र में, उ0प्र0 के मिर्जापुर व रिहन्द क्षेत्र में, मध्य प्रदेश में नर्वदा घाटी में, महेश्वर व होशगांबाद में सुदूर अतीत के पूर्व पाषाण काल के अनेक अवशेष चिन्ह प्राप्त हुए है। मध्य प्रदेश में गांधीसागर के पास पर्वत श्रेणियों की गुफाओं में, भोपाल के पास भीमवेटका, होशंगाबाद, कैमूर, पंचवटी व रायगढ़, सिंघनपुर व कवरा की पहाड़ियों की कन्दराओं में मनुष्यों द्वारा बनाये चित्र, मिट्टी के पात्र, पाषाण के उपकरण तथा बहुतेरी दैनिक उपयोग की वस्तुये उपलब्ध हुई है। इन प्रमाणो से निर्विवाद है कि मानव इतिहास के प्रारम्भिक काल से ही हमारा भारत कर्म की लीला भूमि रहा है।

धर्म में उन सिद्धान्तो को भी सम्मिलित कर लिया गया है जिसकी अनुभूति समाज के महान पुरूषो को सत्य का अन्वेषण जीवन में उनका उपयोग करते समय हुई थी। वास्तव में, धर्म सांस्कृतिक उत्तराधिकार के रूप में वह अमूल्य निधि है, जिसके सहारे कोई भी व्यक्ति श्रेष्ठतम ऊँचाई तक अपने व्यक्तित्व का सफल विकास कर सके। भारतीय संस्कृति में धर्म और आध्यात्मवाद अपना विशिष्ट स्थान रखते है। इनसे यह संस्कृति ओत–प्रोत है। भारतीय संस्कृति में धर्म की अभिव्यक्ति अत्यन्त ही व्यापक रूप में रही है। धर्म में ब्रह्म, देवी देवताओ, धार्मिक क्रिया–विधियो, कर्मकान्ड, स्वर्ग–नरक तथा अन्य

धार्मिक सिद्धान्त तो है ही परन्तु उनमें उन अनेक नियमो और विधि विधानो को भी सम्मिलित कर लिया गया है, जिनसे व्यक्ति के अभ्युदय के साथ–साथ समाज की आदि भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति भी हो सके।

भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि प्रायः दार्शनिक रही है। दर्शन को राष्ट्रीय जीवन में व्यावहारिक कर दिया गया है, यह भारतीय संस्कृति की विशिष्ट देन है।

धार्मिक और दार्शनिक आदर्शों की प्रतिष्ठा करते हुए ही भारत में गद्य–काव्य साहित्य, शिल्प, ललित कलायें, नृत्य, नाट्य आदि की प्रवृत्तियाँ समाज में सम्मानित हो सकी थी।

भारतीयों को प्राचीन काल से ही समझाया गया कि, उनके जीवन काल की उपलब्धि देव कृपा से होती है। भारतीय प्रगति के प्रायः सभी क्षेत्र देवी देवताओ से सम्बंधित कर दिये गये थे। एक ही ब्रह्म की सत्ता में इन्द्र, विष्णु, शिव, अग्नि, सूर्य इत्यादि सम्मिलित किये गये थे, तथा यज्ञ पूजन अर्चन से देवताओ को प्रसन्न होना बताया गया। भारतीय संस्कृति के मनीषियो की दृष्टि समन्वयात्मक रही है। अपने तप व अनुसन्धान से जो उन्होंने खोजा व प्राप्त किया उसे सहर्ष दूसरो को दे दिया व दूसरो के ज्ञान विज्ञान व नेक बातो को ग्रहण भी किया। इसी कारण पश्चिम की विलक्षण प्रवृत्तियाँ, विचारधारा व विज्ञान की बाते हमारे देश में प्रविष्ट हो पायी व हो रही है।

प्रायः यह देखा जाता है कि मनुष्यों की प्रवृत्तियाँ उनके सुख के लिए होती है, क्योंकि सभी अपनी सुख समृद्धि चाहते है, परन्तु हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिक्ख सभी धर्मो में यह षिक्षा दी गयी है – ''किसी को कष्ट न दो, दूसरो का कष्ट दूर करने के लिए तन, मन और धन से सदा सन्नद्ध रहो, दूसरो की उन्नति करने में सहयोग करो। भारतीय संस्कृति में भावना की प्रच्छन्न एकता और प्रयास की अनुपम अविच्छिन्नता सदा से विद्यमान रही है। भारत के प्रमुख आचार्य व सन्तो ने भारत के तीर्थो में भ्रमण करके अपने ज्ञान व हिन्दू धर्म का प्रकाश आच्छादित किया। स्वामी शंकराचार्य जी इसके श्रेष्ठ उदाहरण है।

भारत का विश्वास ''सर्वे सुखिनः सन्तु'' में रहा है। जो कुछ सत्य, शिव और सुन्दर हो वह सबके लिए हो। भारतीय संस्कृति अपने इन्हीं विशिष्ट गुणो से विश्व में जीवन्त है, जबकि अन्य समकालीन विश्व सभ्यतायें काल के गाल में पुरातत्व के कुछ अवशेष छोड़ सदा के लिए समाप्त हो गयी है। भारतीय संस्कृति का यह उपदेश रहा है कि मनुष्य को उन सुखो का त्याग करने को तत्पर रहना चाहिए जिनकी प्राप्ति के लिए दूसरो का शोषण करना पड़े।

भारत का विदेशो से राजनीतिक, व्यापारिक व सांस्कृतिक सम्बंध प्राचीन काल से है। भारत का सम्बंध, मध्य एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ प्रारम्भ हुआ, परन्तु इसके पूर्व ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में भारत का सम्बन्ध यूरोप के देशों के साथ प्रगाढ़ हो चुका था। भारत के गर्म मसालो तथा सुगंधित द्रव्यो की मांग विदेशो में बहुत अधिक थी। ये वस्तुएँ दक्षिण भारत के केरल, गोवा, तमिलनाडु पश्चिमी व पूर्वी घाट पर पर्याप्त रूप से उगायी जाती है। इन्हें व्यापारी अपने–अपने जहाजो से लाद कर विदेशो में ले जाकर बेचते थे। धीरे–धीरे इन वस्तुओ की मांग बाटने पर भारतीय व्यापारी दक्षिण पूर्व के समुद्र तटीय देशो से सम्पर्क कर इन मसालो को वहॉ उगाया। कुछ तो व्यापार करने हेतु वही स्थायी रूप से बस गये।

दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत का सम्बंध घनिष्ठ हो गया ईसा की 7वीं शताब्दी तक । इसका शुभारम्भ व्यापारियों ने किया, जो अपना माल लेकर इन दक्षिण–पूर्व द्वीप समूहों में पहुँचते थे और बदले में वहॉ से गरम मसाले की वस्तुयें ले आते थे। इन मसालों से भारतीय व्यापारी बहुत धनी हो गए, क्योंकि वे इन मसालों को पश्चिम एशिया के व्यापारियों को बेच देते थे। कुछ व्यापारी, यह सोचकर कि दक्षिण पूर्व एशिया में रहने से उनका व्यापार अधिक चमक सकता है, वहॉ के बन्दरगाहों में बस गए। उनमें से कुछ ने उन देशों की स्त्रियों से विवाह भी कर लिया था। एक आख्यान के अनुसार, कौडिन्य नाम का एक व्यक्ति कंबोडिया पहुॅचकर वहॉ बस गया। उसने वहॉ की राजकुमारी से विवाह किया और उसे भारतीय रीति रिवाज अपनाने के लिए राजी किया। कहा जाता है कि जल्दी ही वहॉ के कुलीन लोगो ने भी उन भारतीय रीति–रिवाजों में से कुछ सीख लिए, जिन्हें उनकी राजकुमारी ने अपनाया था। धीरे–धीरे दक्षिण पूर्व एशिया के लोगो ने भारतीय संस्कृति की कुछ बातें स्वीकार कर ली, परन्तु उन्होंने अपनी परम्पराओं को भी कायम रक्खा, जो अनेक बातों में भारतीय रीति–रिवाजों से मिलती जुलती थी। भारतीय संस्कृति का प्रचार नगरों और दरबारी हलकों में अधिक हुआ। गॉवों में जीवन का पुराना ढंग जारी रहा। भारतीय व्यापारी भारत के विभिन्न भागों जैसे – सौराष्ट्र, तमिलनाडु, उड़ीसा और बंगाल से आते थे। वे अपने साथ अपने प्रादेशिक रीति–रिवाज भी लाते थे। सौराष्ट्र से आने वाले प्रायः जैन होते थे। दक्षिण भारत से आने वाले शैव और वैष्णव होते थे। बंगाल से आने वालों में अधिक बौद्ध होते थे।

सबसे पहले भारत के सम्बन्ध वर्मा (सुवर्णभूमि), मलाया (सुवर्णद्वीप), कम्बोडिया (कम्बोज) और जावा (यवद्वीप) से स्थापित हुए। इन देशों में भारतीय मंदिरो की तरह भव्य मंदिरो का निर्माण हुआ, जैसे–कम्बोडिया में अंकोरवाट का मन्दिर। इस मन्दिर को सूर्य वर्मा द्वितीय ने बनवाया था। जो अपनी विशालता तथा सुन्दरता के कारण अनेक आश्चर्यजनक कीर्ति माना जाता है। साथ ही अनेक भारतीय प्रथाओं का प्रचलन हुआ। पुरोहित और राज परिवार के लोगों ने संस्कष्त सीखी, जिसमें उन्हें, रामायण–महाभारत तथा पुराणों की कथाओ की जानकारी मिली। एक नये प्रकार के साहित्य का विकास हुआ, जिसमें भारतीय कथायें, स्थानीय आख्यानो के साथ घुलमिल गयी। जावाद्वीप में जिस रामायण का पाठ होता है, वह दोनों परम्पराओं का अद्भूत मिश्रण है।

हिन्दू धर्म जाति, अन्धविश्वास व पाखण्ड से भरा था, और इसमें कर्म की महत्ता न होकर जन्म की ही महत्ता बतायी गयी थी। पहले हिन्दू धर्म का बहुत प्रचार प्रसार व वृद्धि हुआ, परन्तु अनेक कारणो से हिन्दु धर्म का कालान्तर में ह्रास होना प्रारम्भ हुआ, और बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार हुआ। बौद्ध धर्म व उसके साहित्य ने हिन्दू धर्म की इस कमजोरी का लाभ उठाया व बौद्ध धर्म को इसमें सफलता मिली। कम्ब्रोडिया में अंकोरवाट के निकट बयान के भव्य मंदिर इसका प्रमाण है। इसी भांति, जावा में बोरोबोदूर (बरबुदर) आज भी इस क्षेत्र का सबसे भव्य व विशाल बौद्ध मन्दिर है। थाईलैण्ड व वर्मा (म्यामार) ने भी बौद्ध धर्म अपना लिया। इन देषो के मंदिरो के मूर्तिकला व चित्रकला में और भारतीय मंदिरो (बौद्ध) के कलाकृति में बहुत साम्य है। विशाल प्रस्तर खंडो से बनाये गये, इस बौद्ध मन्दिर में साम्य है। विशाल प्रस्तर खण्डो से बनाये गये, इस बौद्ध मंदिर को विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक माना जाता है। इस मंदिर में भारतीय महाकाव्य रामायण व महाभारत की प्रमुख घटनाओं के उभारदार शिल्प चित्र बनाये

गये हैं। इन मंदिरो में कुछ अन्य विशेषतायें भी है। यह विशेषता मिश्रित सभ्यता व संस्कृति का है।

धर्म प्रचारक और व्यापारी एशिया के अन्य भागो व भारत से यहां पहुँचे थे। इस काल में चीन के साथ, भारत के व्यापार व धर्म प्रचार के कारण सम्बन्ध बड़े मधुर थे। दोनों देशों में राजदूतो व धर्म प्रचारको का आदान–प्रदान हुआ था। चीन, मध्य एशिया में भी दक्षिण पूर्व एशिया की भांति, बौद्ध धर्म सभी जगह छा कर शक्तिशाली हो गया था। इसी प्रकार, व्यापारी और धर्म प्रचारक उंचे हिमालय के मध्य बने दर्रों से आर–पार यात्रा करने लगे, तो तिब्बत के साथ भी संम्बन्ध बढ़े। इस तरह, व्यापार के माध्यम से भारत का विभिन्न देशो व स्थानों से सम्पर्क स्थापित हो गया। चीन और पश्चिमी एशिया के बीच का मार्ग मध्य एशिया से होकर जाता है, जिसे प्राचीन रेशम मार्ग कहा जाता था। इस रेशम के व्यापार में भारतीयों ने भी भाग लिया। भारतीय व्यापारियों को इस मार्ग से पष्चिम यूरोप, ईरान, अरेविया, मिश्र इत्यादि देशो से व्यापार करने की नई सुविधा मिली, क्योंकि यह मार्ग जल मार्ग से अधिक सुविधाजनक था। इसके अतिरिक्त भारतीय व्यापारी अपने माल को, भूमध्य सागरीय देशो के पूर्वी अफ्रीका के देशों में ले जाकर बेचने लगे। यह रेशमी मार्ग जहाँ व्यापारियों को लाभ प्रद सिद्ध हुआ, वही दूसरे देश के लूटेरी जातियों को भारत में आक्रमण का रास्ता भी दे दिया। इसी रास्ते का उपयोग कर प्रारम्भ में कुषाण आये थे, उसके बाद तुर्क व अन्त में क्रूर, लूटेरा, चंगेज खॉ आया था, जिसने केवल दिल्ली में ही लाखो हिन्दुओं का सिर कटवा दिया था। यहॉ से असंख्य धन दौलत लूट कर वापस चला गया।

मुसलमान आक्रमणकारियों में सबसे अधिक समय तक (लगभग 400 वर्ष तक) मुगल शासको ने राज्य किया। उन्हीं के अंतिम शासन काल में इस देश में पुर्तगाली, फ्रांसीसी व अंग्रेज लोग यूरोप से व्यापार करने के इरादे से आये। भारत की आंतरिक राजनैतिक स्थिति दुर्बल व अलग–थलग, देख उन्होंने अपनी–अपनी सेनायें बनायी व राजनीति में भाग लेना प्रारम्भ किया। अंग्रेजो ने फूट डालो, राजाओ को आपस में लड़ाओ की नीति अपनायी। वे इसमें सफल हुए। उन्होंने पुर्तगाली व फ्रांसीसी सेनाओं को परास्त कर उनके बढ़ाव को स्थिर कर दिया। अंग्रेज धीरे–धीरे पूरे भारत पर अपना राज्य स्थापित कर लिया। अंग्रेज मुसलमानो से कम क्रूर नहीं थे। अंग्रेजो ने साम–दाम दण्ड–भेद अपना कर हिन्दुओ को ईसाई बनाना प्रारम्भ किया, यहाँ की मातृभाषा हिन्दी व अन्य भाषाओं को समाप्त कर पूरे देश में अंग्रेजी अनिवार्य कर दिया। अंग्रेजी स्कूल कालेज, ईसाई चर्च, मिशनरी बनाना प्रारम्भ किया। बल पूर्वक भारतीयो से लगान कर लेना प्रारम्भ किया, व राजा महाराजा से धन वसूला।

अंग्रेजो के अत्याचार से दुखी होकर भारत में 1857 में विद्रोह का प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध लड़ा गया, जिसे अंग्रेजो ने अपनी कूटनीति व युद्ध कौशल व आधुनिक सेना से दबा दिया। भारत में रेल, सड़क, टेलीफोन इत्यादि का जो जाल अंग्रेजो ने बिछाया, वह उन्होने अपने स्वार्थ में बिछाया था, ताकि वे पुनः अपने विरूद्ध उभड़े युद्ध को शीघ्र दबा सकें। अंग्रेजो ने भारत की उन्नत कृषि, व्यापार, शिल्प, कला, कौशल को नष्ट कर दिया, और ब्रिटेन का सामान यहॉ ऊँचे मूल्य में बेचने लगें और धनी भारत को गरीब भारत बना दिया। उनकी सेना में भारतीय जब भरती नहीं होते थे, तो उन्होने बंगाल में भयंकर अकाल पड़ने पर उनकी अपने राजकीय कोष से कोई सहायता नहीं किया तथा उसमें अपना कोई योगदान नहीं दिया। गरीबी से तंग आकर भारतीय लोग अंग्रेजी सेना में भरती होने लगें, जिसका लाभ उन्होंने द्वितीय

विश्व युद्ध में लिया। अंग्रेजो के अत्याचार से दुखी होकर पुनः सभी भारतीय नेता, व क्रान्तिकारी एक जुट होकर अंग्रेजो को इस देश से भगाने व देश को स्वतन्त्र कराने में लग गये। अंत में राष्ट्रपिता मोहनचन्द करमचन्द गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी ने, सफलता पायी व हमारा देश 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजो की दासता से मुक्त होकर स्वतन्त्र हो गया।

विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं का हमारा देश धर्म, परम्पराओं के कारण आज भी जीवन्त है, जबकि अन्य सभी सभ्यताओं व संस्कृतियों का लोप हो गया है। यह अपने श्रेष्ठ जनसंख्या, धन, व्यापार, कला कौशल व शिल्पशास्त्र में विश्व का कभी सिरमौर बन ''सोने की चिड़िया'' के नाम से विख्यात था। तभी तो विश्व की लूटेरी जातियॉ इस देश पर बारी–बारी से आक्रमण किया, व यहॉ के धन को लूटकर व यहॉ के लाखो लोगो का बेरहमी से बध किया व उनको मुसलमान व ईसाई बनाया। दरिद्र होना परम दुख का कारण माना गया है, परन्तु अत्यधिक धनी होना भी परम दुख का कारण होता है, क्योंकि लूट व डकैती का शिकार धनी ही होते है। कमोवेश यही कहानी हमारे देश भारत की है। भारत का धन विदेशो में लूट कर ले जाया गया, वह चिन्ता की बात नहीं है। धन गया है, तो आ जायेगा। प्रसन्नता की बात तो यह है कि लगभग 5000 वर्ष ई0पू0 से लेकर आजतक भारत की धर्म–प्राण जनता ने अपना धीरज व धरम नहीं खोया है अपने धर्म व परम्परा को आज तक, अपने प्राणों के समान सुरक्षित रक्खी बैठी है।

परन्तु परम दुख की बात तो यह है कि अंग्रेजो के प्रिय व उनके चाटुकार भारतीय नेता व उच्च अधिकारी वर्ग के लोग मातृभाषा हिन्दी की उपेक्षा कर अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा के समान, सम्मान दिये बैठे है, व भारत में धर्म निरपेक्ष यानी अधर्म की राजनीति कर रहे है, संभवतः उनकी यही कृति व सोच भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति को अतंतः दीमक की भांति एक दिन अवश्य धीरे–धीरे देगी। विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का विस्तृत वर्णन व उसमें भारत की सभ्यता संस्कृति का दिग्दर्शन उसमें समाहीत है, इसी परम्परा का प्रभाव विदेशियों पर अक्षुण्य रूप से पड़ा जो आज भी दिग्दर्शन होता है। जो पूरे विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत है।

Refrence

1. Kala aur Sanskriti, Shahitaya Bhawan Limited, Allahabad, 1959 (Writer Name- Vashudev Sharan Aggrawal)
2. Vishwa ki Prachin Sabhyataye, Vishw Vidhalaya,Varanasi 1990. (writer name- shri ram goal)
3. Parachim Bharat ka Samajik Iitihas (History), Vihar Hindi Granth Aakadami, Patna, Pratham Sanskaran 1974, Varanasi 1980. (writer name- Jai Shankar Misra)
4. Hindustan ki Purani Sabhyata, Prayag 1931 (Writer Name- Veni Prasad)
5. Dakhin (South) Bharat ka Iitihas (History), Chaukhamba Vidhya Bhawan,Varanasi, Second Edition, 2055. (writer name- Balram Srivastav)
6. Bhuddista India, Kolkata 1950 (Devids Reej)
7. Select Incription Bearing on Indian History And Civilization (Second Edition) Second Part Kolkata Vishwavidalya, 1965. (Writer Name- D.C.Sarkar)
8. Chalukayaj of Vatapi, Aagam Kala Prakashan, Delhi 1984.
9. Bharti Dharmik Sahitaya Ka Iitihas(History), Second Edition,